प्रतिदर्श प्रश्न-पत्र 2022-23
Sample Paper - 3
विषय हिंदी (आधार)
(विषय कोड -302)
कक्षा- बारहवीं

निर्धारित समय -3 घंटे **अधिकतम अंक – 80**

सामान्य और आवश्यक निर्देश-

- इस प्रश्न पत्र में दो खंड हैं- खंड 'अ' और 'ब'। कुल प्रश्न 13 हैं।
- खंड 'अ' में 45 वस्तुपरक प्रश्न पूछे गए हैं, जिनमें से केवल 40 प्रश्नों के उत्तर देने हैं।
- खंड 'ब' में वर्णनात्मक प्रश्न पूछे गए हैं। प्रश्नों के उचित आंतरिक विकल्प दिए गए हैं ।
- प्रश्नों के उत्तर दिए गए निर्देशों का पालन करते हुए दीजिए।
- दोनों खंडों के प्रश्नों के उत्तर देना अनिवार्य है ।
- यथासंभव दोनों खंडों के प्रश्नों के उत्तर क्रमशः लिखिए।

खंड अ (वस्तुपरक प्रश्न)

1. **अनुच्छेद को ध्यानपूर्वक पढ़कर निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिये:** **[10]**

बड़ी कठिन समस्या है। झूठी बातों को सुनकर चुप हो कर रहना ही भले आदमी की चाल है, परंतु इस स्वार्थ और लिप्सा के जगत में जिन लोगों ने करोड़ों के जीवन-मरण का भार कंधे पर लिया है वे उपेक्षा भी नहीं कर सकते। ज़रा सी गफलत हुई कि सारे संसार में आपके विरुद्ध ज़हरीला वातावरण तैयार हो जाएगा। आधुनिक युग का यह एक बड़ा भारी अभिशाप है कि गलत बातें बड़ी तेजी से फैल जाती हैं।

समाचारों के शीघ्र आदान-प्रदान के साधन इस युग में बड़े प्रबल हैं, जबकि धैर्य और शांति से मनुष्य की भलाई के लिए सोचने के साधन अब भी बहुत दुर्बल हैं। सो, जहाँ हमें चुप होना चाहिए, वहाँ चुप रह जाना खतरनाक हो गया है। हमारा सारा साहित्य नीति और सच्चाई का साहित्य है। भारतवर्ष की आत्मा कभी दंगा-फसाद और टंटे को पसंद नहीं करती परंतु इतनी तेज़ी से कूटनीति और मिथ्या का चक्र चलाया जा रहा है कि हम चुप नहीं बैठ सकते।

अगर लाखों-करोड़ों की हत्या से बचना है तो हमें टंटे में पड़ना ही होगा। हम किसी को मारना नहीं चाहते पर कोई हम पर अन्याय से टूट पड़े तो हमें ज़रूर कुछ करना पड़ेगा। हमारे अंदर हया है और अन्याय करके पछताने की जो आदत है उसे कोई हमारी दुर्बलता समझे और हमें सारी दुनिया के सामने बदनाम करे यह हमसे नहीं सहा जाएगा। सहा जाना भी नहीं चाहिए। सो, हालत यह है कि हम सच्चाई और भद्रता पर दृढ़ रहते हैं और ओछे वाद-विवाद और दंगे-फसादों में नहीं पड़ते। राजनीति कोई अजपा-जाप तो है नहीं।

यह स्वार्थों का संघर्ष है। करोड़ों मनुष्यों की इज्जत और जीवन-मरण का भार जिन्होंने उठाया है वे समाधि नहीं लगा सकते। उन्हें स्वार्थों के संघर्ष में पड़ना ही पड़ेगा और फिर भी हमें स्वार्थी नहीं बनना है।

(i) लेखक ने संघर्ष करना आवश्यक क्यों माना है?

i. जन के लाभ से बचने के लिए

ii. जन की हानि से बचने के लिए

iii. स्वार्थ को दूर करने के लिए
iv. परहित को दूर करने के लिए

(ii) हमारा सारा साहित्य किसका साहित्य है?
i. केवल नीति का
ii. केवल सच्चाई का
iii. नीति और सच्चाई का
iv. प्रबलता का

(iii) कौन-से साधन अब भी दुर्बल हैं?
i. मनुष्य की भलाई को सोचने के
ii. मनुष्य के स्वार्थ को सोचने के
iii. मनुष्य के अहित को सोचने के
iv. दूसरों के विवाद को सोचने के

(iv) हम किस पर दृढ़ रहते हैं?
i. केवल सच्चाई पर
ii. केवल भद्रता पर
iii. सच्चाई और भद्रता पर
iv. केवल नीति पर

(v) **आदान-प्रदान** में प्रयुक्त समास है?
i. कर्मधारय समास
ii. द्वंद्व समास
iii. द्विगु समास
iv. तत्पुरुष समास

(vi) गद्यांश के लिए सर्वाधिक उपयुक्त शीर्षक होगा-
i. अन्याय का प्रतिकार
ii. न्याय का प्रतिकार
iii. सत्य का प्रतिकार
iv. अहिंसा का प्रतिकार

(vii) **निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए-**
I. आधुनिक युग में गलत चीजें धीरे नहीं फैलती हैं।
II. राजनीति स्वार्थों का संघर्ष है।
III. झूठी बातों को सुनकर चुप रहना बुरे आदमी की चाल है।
उपरिलिखित कथनों में से कौन सही है/हैं?
i. I और II

ii. II और III

iii. केवल II

iv. केवल I

(viii) राजनीति अफवाहों के जरिए क्या करवाती है?

i. लाभ

ii. दंगे

iii. उत्सव

iv. पर्व

(ix) आधुनिक युग का अभिशाप किसे माना गया है?

i. भलाई के साधनों को।

ii. गलत बातों का प्रचार-प्रसार।

iii. सही बातों का प्रचार-प्रसार।

iv. राजनीति को।

(x) निम्नलिखित कथन (A) तथा कारण (R) को ध्यानपूर्वक पढ़िए। उसके बाद दिए गए विकल्पों में से कोई एक सही विकल्प चुनकर लिखिए।

कथन (A): हम सच्चाई और भद्रता पर दृढ़ रहते हैं और ओछे वाद-विवाद और दंगे-फसादों में नहीं पड़ते।

कारण (R): करोड़ों मनुष्यों की इज्जत और जीवन-मरण का भार जिन्होंने उठाया है वे समाधि नहीं लगा सकते। उन्हें स्वार्थों के संघर्ष में पड़ना ही पड़ेगा और फिर भी हमें स्वार्थी नहीं बनना है।

i. कथन (A) तथा कारण (R) दोनों सही हैं तथा कारण (R) कथन (A) की सही व्याख्या करता है।

ii. कथन (A) गलत है लेकिन कारण (R) सही है।

iii. कथन (A) तथा कारण (R) दोनों गलत हैं।

iv. कथन (A) सही है लेकिन कारण (R) उसकी गलत व्याख्या करता है।

2. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर देने के लिए उपयुक्त विकल्प का चयन कीजिए- **[5]**

(i) न्यूज के किस रूप में कम से कम शब्दों में सूचना दी जाती है?

क) लाइव
ख) ड्राइ एंकर
ग) रेडियो बुलेटिन
घ) ब्रेकिंग न्यूज

(ii) विश्व में पत्रकारिता को अस्तित्व में आए कितने वर्ष हुए?

क) 400 वर्ष
ख) 100 वर्ष
ग) 300 वर्ष
घ) 600 वर्ष

(iii) जब दो व्यक्ति आपस में और आमने-सामने संचार करते हैं तो इसे ________ कहते हैं।

क) मौखिक संचार
ख) जनसंचार
ग) समूह संचार
घ) अंतरवैयक्तिक संचार

(iv) वह पत्रकारिता जो सरकार के कामकाज पर निगाह रखती है और गड़बड़ियों का पर्दाफाश करती है, ________ पत्रकारिता कहलाती है।

क) वॉचडॉग
ख) खोजपरक
ग) एडवोकेसी
घ) विशेषीकृत

(v) **मंदड़िए** शब्द का संबंध है:

क) शिक्षा से
ख) राजनीति से
ग) कारोबार से
घ) अपराध से

3. **अनुच्छेद को ध्यानपूर्वक पढ़कर निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिये:** **[5]**

अरुण यह मधुमय देश हमारा।
जहाँ पहुँच अनजान क्षितिज को मिलता एक सहारा।
सरस तामरस गर्भ विभा परं-नाच रही तरु शिखा मनोहर।
छिटका जीवन हरियाली पर-मंगल कुंकुम सारा।
लघु सुरधनु से पंख पसारे-शीतल मलय समीर सहारे।
उड़ते खग जिस ओर मुँह किये-समझ नीड़ निज प्यारा।
बरसाती आँखों के बादल-बनते जहाँ भरे करुणा जल।
लहरें टकराती अनंत की-पाकर जहाँ किनारा।
हेम-कुंभ ले उषा सवेरे-भरती ढुलकाती सुख मेरे।
मदिर ऊँघते रहते-जब-जगकर रजनी भर तारा।

(i) काव्यांश में किस देश का वर्णन है?

क) चीन का
ख) जापान का
ग) नेपाल का
घ) भारत का

(ii) **लघु सुरधनु से पंख पसारे** - पंक्ति में कौनसा अलंकार है?

क) रूपक
ख) उपमा
ग) उत्प्रेक्षा
घ) अनुप्रास

(iii) भारत में बादल कौनसा जल बरसाते हैं?

क) सत्य का
ख) परोपकार का
ग) असत्य का
घ) करुणा का

(iv) **उषा ने सूर्य-किरणों की रोली जीवन-जगत पर छिड़ककर मंगलकारी काम किया है** - आशय स्पष्ट करने वाली पंक्ति है-

क) छिटका जीवन हरियाली पर-
मंगल कुंकुम सारा।

ख) हेम-कुंभ ले उषा सवेरे-भरती
ढुलकाती सुख मेरे।

ग) लहरें टकराती अनंत की-पाकर
जहाँ किनारा।

घ) मदिर ऊँघते रहते-जब-जगकर
रजनी भर तारा।

(v) भारत देश की विशेषता है-

क) यहाँ बादल बरसते हैं।

ख) यहाँ सर्दी पड़ती है।

ग) यहाँ गर्मी पड़ती है।

घ) यहाँ अपरिचित विदेशियों को भी सहारा मिलता है।

अथवा

अनुच्छेद को ध्यानपूर्वक पढ़कर निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिये: [5]

सच हम नहीं सच तुम नहीं
सच है महज संघर्ष हो।
संघर्ष से हटकर जिए तो क्या जिए हम कि तुम,
जो नत हुआ वह मृत हुआ ज्यों वृक्ष से
झरकर कुसुम जो लक्ष्य भूल सका नहीं
जो हार देख झुका नहीं।
जिसने प्रणय पाथेय माना जीत उसकी रही।
सच हम नहीं सच तुम नहीं।
ऐसा करो जिससे न प्राणों में कहीं जड़ता रहे।
जो भी जहाँ चुपचाप अपने आपसे लड़ता रहे।
जो भी परिस्थितियाँ मिलें।
काँटे चुभें, कलियाँ खिलें।
हारे नहीं इंसान, है संदेश जीवन का यही।
सच हम नहीं सच तुम नहीं।

(i) कवि ने जीवन का सच किसे माना है?

क) तुम

ख) हम और तुम

ग) हम

घ) संघर्ष

(ii) कवि के अनुसार जीत उसी की होती है, जो

क) समस्याओं से नहीं घबराता

ख) जो डर जाता है

ग) संघर्षों से डरकर पीछे हट जाता है

घ) हर परिस्थिति को चुनौती के रूप में स्वीकार नहीं करता

(iii) **कुसुम** शब्द का पर्यायवाची इनमें से कौन-सा शब्द नहीं है?

क) गुलाब

ख) सुमन

ग) पुहुप

घ) प्रसून

(iv) **जो नत हुआ वह मृत हुआ** पंक्ति से कवि का आशय है

क) जो झुक गया, वह मर गया

ख) जो गिरता है, उसका पतन होता है

ग) जो झुक गया, वही सफल हो गया

घ) जो सतत चलता नहीं, वह मर जाता है

(v) उपर्युक्त काव्यांश के माध्यम से कवि क्या संदेश देना चाहता है?

क) वृक्ष से झड़कर फूल मुरझा जाता है

ख) हमें विषम परिस्थितियों में हार नहीं माननी चाहिए

ग) किसी को अपना लक्ष्य नहीं भूलना चाहिए

घ) संसार में कुछ भी सत्य नहीं है

4. **अनुच्छेद को ध्यानपूर्वक पढ़कर निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिये:** **[5]**

अँधेरी रात चुपचाप आँसू बहा रही थी। निःस्तब्धता करुण सिसकियों और आहों को बलपूर्वक अपने हृदय से ही दबाने की चेष्टा कर रही थी। आकाश में तारे चमक रहे थे। पृथ्वी पर कहीं प्रकाश का नाम नहीं। आकाश से टूटकर यदि कोई भावुक तारा पृथ्वी पर जाना भी चाहता, तो उसकी ज्योति और शक्ति रास्ते में ही समाप्त हो जाती थी। अन्य तारे उसकी भावुकता अथवा असफलता पर खिलखिलाकर हँस पड़ते थे। (फणीश्वर नाथ रेणु)

(i) गाँव में ऐसा क्या हो गया था कि अँधेरी रात चुपचाप आँसू बहा रही थी?

क) अतिवृष्टि का प्रकोप

ख) हैजे का प्रकोप

ग) हैजे, मलेरिया रूपी महामारी का प्रकोप

घ) मलेरिया का प्रकोप

(ii) कहानी में वातावरण-निर्माण के लिए लेखक ने चाँदनी रात के स्थान पर अंधेरी रात का उल्लेख क्यों किया है?

क) महामारी की विभीषिका दर्शाने के लिए

ख) बीमारों की दशा बताने के लिए

ग) गरीब की दशा बताने के लिए

घ) निराशा दर्शाने के लिए

(iii) गद्यांश के आधार पर लेखक की भाषा-शैली पर टिप्पणी कीजिए।

क) सशक्त अभिव्यक्ति

ख) मानवीकरण

ग) अलंकारयुक्त, सशक्त खड़ी बोली

घ) आलंकारिक चित्रात्मक भाषा

(iv) निम्नलिखित कथन (A) तथा कारण (R) को ध्यानपूर्वक पढ़िए। उसके बाद दिए गए विकल्पों में से कोई एक सही विकल्प चुनकर लिखिए।
कथन (A): अँधेरी रात चुपचाप आँसू बहा रही थी।
कारण (R): निःस्तब्धता करुण सिसकियों और आहों को बलपूर्वक अपने हृदय से ही दबाने की चेष्टा कर रही थी।

क) कथन (A) तथा कारण (R) दोनों सही हैं तथा कारण (R) कथन (A) की सही व्याख्या करता है।

ख) कथन (A) तथा कारण (R) दोनों गलत हैं।

ग) कथन (A) सही है लेकिन कारण (R) उसकी गलत व्याख्या करता है।

घ) कथन (A) गलत है लेकिन कारण (R) सही है।

(v) गद्यांश के आधार पर निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए-
i. अँधेरी रात थी।
ii. आकाश में तारों का नामोनिशान नहीं था।
iii. पृथ्वी पर प्रकाश फैला हुआ था।
उपरिलिखित कथनों में से कौन सही है/हैं?

क) ii और iii

ख) केवल ii

ग) केवल iii

घ) केवल i

5. **अनुच्छेद को ध्यानपूर्वक पढ़कर निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिये:** [5]

मैं जग-जीवन का भार लिए फिरता हूँ,
फिर भी जीवन में प्यार लिए फिरता हूँ;
कर दिया किसी ने झंकृत जिनको छूकर
मैं साँसों के दो तार लिए फिरता हूँ।
मैं स्नेह-सुरा का पान किया करता हूँ
मैं कभी न जग का ध्यान किया करता हूँ
जग पूछ रहा उनको, जो जग की गाते,
मैं अपने मन का गान किया करता हूँ

(i) काव्यांश में कवि किसका भार लिए फिरता है?

क) घर तथा परिवार का

ख) आस-पड़ोस का

ग) संसार का

घ) अपने कार्यालय का

(ii) काव्यांश के अनुसार कवि सबको क्या बाँट रहा है?

क) प्रेम　　　　　　　　　　ख) आशा

ग) दुःख　　　　　　　　　　घ) खुशियाँ

(iii) कवि अपने जीवन में किस सुरा का पान करता है?

क) ईष्या-द्वेष　　　　　　　　ख) स्नेह

ग) सभी विकल्प सही हैं　　　　घ) उत्साह-उमंग

(iv) कवि ने किसका ध्यान नहीं करने की बात की है?

क) संसार के स्वरूप की　　　　ख) संसार की भाव प्रधानता की

ग) संसार की समर्थता की　　　घ) संसार के बंधनों की

(v) कवि के अनुसार संसार में किन लोगों को प्रतिष्ठा प्राप्त होती है?

क) संसार के लिए उच्च साहित्य रखने वालों को　　ख) संसार के हित में कार्य करने वालों को

ग) संसार का झूठा गुणगान करने वालों को　　घ) संसार की झूठी प्रशंसा न करने वालों को

6. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर देने के लिए उपयुक्त विकल्प का चयन कीजिए- **[10]**

(i) **सिल्वर वैडिंग** पाठ के आधार पर किशन दा रहते थे?

क) महाराष्ट्र　　　　　　　　ख) पटना

ग) पंजाब　　　　　　　　　घ) दिल्ली

(ii) **सिल्वर वेडिंग** कहानी के केंद्र में क्या है?

क) वेडिंग ऐनिवर्सरी　　　　　ख) लेखक

ग) चड्ढा　　　　　　　　　घ) नई नौकरी

(iii) जब सब्जी लेकर यशोधर घर पहुँचे तो उनकी दशा कैसी थी?

क) बचपन के सुदामा जैसी　　　ख) पत्नी के साथ सुदामा जैसी

ग) द्वारिका से लौटे सुदामा जैसी　　घ) द्वारिका जाने वाले सुदामा जैसी

(iv) यशोधर पंत के ऑफिस में असिस्टेंट ग्रेड में नया कौन आया था? [**सिल्वर वेडिंग**]

क) चड्ढा　　　　　　　　　ख) वाई० डी०

ग) किशनदा　　　　　　　　घ) मेनन

(v) **जूझ** कहानी से लेखक की किस प्रवृत्ति का उद्घाटन हुआ है?

क) संघर्षमयी प्रवृत्ति का | ख) कविता करने की प्रवृत्ति का

ग) लेखन प्रवृत्ति का | घ) पढ़ने की प्रवृत्ति का

(vi) कहानी के शीर्षक **जूझ** का अर्थ है-

क) मेहनत | ख) चालाकी

ग) कठिनाई | घ) संघर्ष

(vii) कोल्हू से क्या मिलता था? **[जूझ]**

क) ईख | ख) गुड़

ग) तेल | घ) फसल

(viii) सिंधु घाटी में निम्न में से किसका उन्नत प्रबंध है? **[अतीत में दबे पाँव]**

क) महल | ख) स्तूप

ग) जल निकासी | घ) जमीन

(ix) **अतीत में दबे पाँव** पाठ के आधार पर फसलों की ढुलाई किसके द्वारा की जाती थी?

क) हथठेला के | ख) ऊँटगाड़ी के

ग) बैलगाड़ी के | घ) सिर पर रख कर

(x) **अतीत में दबे पाँव** पाठ के आधार पर अजायबघर में तैनात व्यक्ति का नाम क्या था?

क) नवाज़ खान | ख) मोहम्मद खान

ग) अली बख्तावर | घ) अली नवाज़

खंड - ब (वर्णनात्मक प्रश्न)

7. निम्नलिखित प्रश्नों में से किन्ही दो के उत्तर दीजिये: **[6]**

(i) रेडियो नाटक की विशेषताओं को स्पष्ट कीजिए।

(ii) संचार के प्रमुख तत्त्व कौन-कौन से हैं?

(iii) विशेष लेखन के पाठकों की विशेषता लिखिए?

8. निम्नलिखित में से किसी एक विषय पर लेख लिखिये: **[6]**

(i) **परहित सरिस धर्म नहिं भाई** विषय पर एक अनुच्छेद लिखिए।

(ii) **प्राकृतिक आपदाएँ** विषय पर एक अनुच्छेद लिखिए।

(iii) **नक्सलवाद की समस्या** विषय पर रचनात्मक लेख लिखिए।

(iv) **तनाव : आधुनिक जीवन-शैली की देन** विषय पर एक अनुच्छेद लिखिए।

9. निम्नलिखित प्रश्नों में से किन्ही दो के उत्तर दीजिये: **[8]**

(i) जन-धन योजना विषय पर एक आलेख लिखिए।

(ii) प्रदूषित यमुना विषय पर एक आलेख लिखिए।

(iii) **क्रिकेट का बादशाह:सचिन** विषय पर एक फीचर लिखिए।

10. निम्नलिखित प्रश्नों में से किन्ही दो के उत्तर दीजिये: **[6]**

(i) नीचे दिए गए खबर के अंश को पढ़िए और बिहार के इस **बुधिया** से एक काल्पनिक साक्षात्कार कीजिए-

उम्र पाँच साल, संपूर्ण रूप से विकलांग और दौड़ गया पाँच किलोमीटर। सुनने में थोड़ा अजीब लगता है, लेकिन यह कारनामा कर दिखाया है पवन ने। बिहारी बुधिया के नाम से प्रसिद्ध पवन जन्म से ही विकलांग है। इसके दोनों हाथ का पुलवा नहीं है, जबकि पैर में सिर्फ़ एड़ी ही है।

पवन ने रविवार को पटना के कारगिल चैक से सुबह 8.40 पर दौड़ना शुरू किया। डाकबंगला रोड, तारामंडल और आर ब्लाक होते हुए पवन का सफ़र एक घंटे बाद शहीद स्मारक पर जाकर खत्म हुआ। पवन द्वारा तय की गई इस दूरी के दौरान 'उम्मीद स्कूल' के तकरीबन तीन सौ बच्चे साथ दौड़ कर उसका हौसला बढ़ा रहे थे। सड़क किनारे खड़े दर्शक यह देखकर हतप्रभ थे कि किस तरह एक विकलांग बच्चा जोश एवं उत्साह के साथ दौड़ता चला जा रहा है। जहानाबाद ज़िले का रहने वाला पवन नवरसना एकेडमी, बेउर में कक्षा एक का छात्र है। असल में पवन का सपना उड़ीसा के बुधिया जैसा करतब दिखाने का है। कुछ माह पूर्व बुधिया 65 किलोमीटर दौड़ चुका है। लेकिन बुधिया पूरी तरह से स्वस्थ है जबकि पवन पूरी तरह से विकलांग। पवन का सपना कश्मीर से कन्याकुमारी तक की दूरी पैदल तय करने का है।

-9 अक्तूबर, 2006 हिंदुस्तान से साभार

(ii) कविता को **फूल के बहाने** से क्या माना गया है? स्पष्ट कीजिए।

(iii) बेकारी की समस्या तुलसी के जमाने में भी थी, उस बेकारी का वर्णन तुलसी के कवित के आधार पर कीजिए।

11. निम्नलिखित प्रश्नों में से किन्ही दो के उत्तर दीजिये: **[4]**

(i) टिप्पणी करें- गोदी के चाँद और गगन के चाँद का रिश्ता।

(ii) **जन्म से ही वे अपने साथ लाते हैं कपास-** कपास के बारे में सोचें कि कपास से बच्चों का क्या संबंध बन सकता है।

(iii) शमशेर की कविता गाँव की सुबह का जीवंत चित्रण है।-पुष्टि कीजिए।

12. निम्नलिखित प्रश्नों में से किन्ही दो के उत्तर दीजिये: **[6]**

(i) भक्तिन लाट साहब तक से लड़ने को तत्पर क्यों थी? इससे उसके स्वभाव की कौन-सी विशेषता उजागर होती है?

(ii) **काले मेघा पानी दें** संस्मरण विज्ञान के सत्य पर सहज प्रेम की विजय का चित्र प्रस्तुत करता हैं- स्पष्ट कीजिए।

(iii) **छोटा मेरा खेत** रचना के संदर्भ में **अंधड़** और **बीज** क्या हैं?

13. निम्नलिखित प्रश्नों में से किन्ही दो के उत्तर दीजिये: **[4]**

(i) बाजार दर्शन से आप क्या समझते हैं? पाठ के आधार पर स्पष्ट कीजिए।

(ii) **वह भी क्या कवि है**?... लेखक **हजारी प्रसाद द्विवेदी** ने इस पंक्ति के आधार पर कवि की किन विशेषताओं को उभारा है?

(iii) लेखक **बाबा साहेब भीमराव आंबेडकर** के आधार पर मनुष्य की क्षमता को कौन-सी बातें प्रभावित करती हैं?

SOLUTION

खंड अ (वस्तुपरक प्रश्न)

1. **अनुच्छेद को ध्यानपूर्वक पढ़कर निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिये:**

बड़ी कठिन समस्या है। झूठी बातों को सुनकर चुप हो कर रहना ही भले आदमी की चाल है, परंतु इस स्वार्थ और लिप्सा के जगत में जिन लोगों ने करोड़ों के जीवन-मरण का भार कंधे पर लिया है वे उपेक्षा भी नहीं कर सकते। ज़रा सी गफलत हुई कि सारे संसार में आपके विरुद्ध ज़हरीला वातावरण तैयार हो जाएगा। आधुनिक युग का यह एक बड़ा भारी अभिशाप है कि गलत बातें बड़ी तेजी से फैल जाती हैं।

समाचारों के शीघ्र आदान-प्रदान के साधन इस युग में बड़े प्रबल हैं, जबकि धैर्य और शांति से मनुष्य की भलाई के लिए सोचने के साधन अब भी बहुत दुर्बल हैं। सो, जहाँ हमें चुप होना चाहिए, वहाँ चुप रह जाना खतरनाक हो गया है। हमारा सारा साहित्य नीति और सच्चाई का साहित्य है। भारतवर्ष की आत्मा कभी दंगा-फसाद और टंटे को पसंद नहीं करती परंतु इतनी तेज़ी से कूटनीति और मिथ्या का चक्र चलाया जा रहा है कि हम चुप नहीं बैठ सकते।

अगर लाखों-करोड़ों की हत्या से बचना है तो हमें टंटे में पड़ना ही होगा। हम किसी को मारना नहीं चाहते पर कोई हम पर अन्याय से टूट पड़े तो हमें ज़रूर कुछ करना पड़ेगा। हमारे अंदर हया है और अन्याय करके पछताने की जो आदत है उसे कोई हमारी दुर्बलता समझे और हमें सारी दुनिया के सामने बदनाम करे यह हमसे नहीं सहा जाएगा। सहा जाना भी नहीं चाहिए। सो, हालत यह है कि हम सच्चाई और भद्रता पर दृढ़ रहते हैं और ओछे वाद-विवाद और दंगे-फसादों में नहीं पड़ते। राजनीति कोई अजपा-जाप तो है नहीं।

यह स्वार्थों का संघर्ष है। करोड़ों मनुष्यों की इज्जत और जीवन-मरण का भार जिन्होंने उठाया है वे समाधि नहीं लगा सकते। उन्हें स्वार्थों के संघर्ष में पड़ना ही पड़ेगा और फिर भी हमें स्वार्थी नहीं बनना है।

(i) (i) जन की हानि से बचने के लिए
(ii) (iii) नीति और सच्चाई का
(iii) (i) मनुष्य की भलाई को सोचने के
(iv) (iii) सच्चाई और भद्रता पर
(v) (ii) द्वंद्व समास
(vi) (i) अन्याय का प्रतिकार
(vii) (i) I और II
(viii) (ii) दंगे
(ix) (iii) सही बातों का प्रचार-प्रसार।
(x) (iv) कथन (A) सही है लेकिन कारण (R) उसकी गलत व्याख्या करता है।

2. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर देने के लिए उपयुक्त विकल्प का चयन कीजिए-

(i) **(घ)** ब्रेकिंग न्यूज

व्याख्या: ब्रेकिंग न्यूज अथवा फ्लैश न्यूज में कम से कम शब्दों में दर्शकों तक सूचना पहुंचाई जाती है।

(ii) **(क)** 400 वर्ष

व्याख्या: विश्व में पत्रकारिता को अस्तित्व में आए लगभग 400 वर्ष हुए है।

(iii)**(घ)** अंतरवैयक्तिक संचार

व्याख्या: अंतरवैयक्तिक संचार:- जब दो व्यक्ति आपस में और आमने-सामने संचार करते हैं तो इसे अंतरवैयक्तिक संचार कहते हैं। इस संचार की मदद से आपसी संबंध विकसित करते हैं और रोजमर्रा की ज़रूरतें पूरी करते हैं।

(iv)**(क)** वॉचडॉग

व्याख्या: वॉचडॉग

(v) **(ग)** कारोबार से

व्याख्या: मंदड़िए शब्द का संबंध कारोबार से है।

3. **अनुच्छेद को ध्यानपूर्वक पढ़कर निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिये:**

अरुण यह मधुमय देश हमारा।
जहाँ पहुँच अनजान क्षितिज को मिलता एक सहारा।
सरस तामरस गर्भ विभा परं-नाच रही तरु शिखा मनोहर।
छिटका जीवन हरियाली पर-मंगल कुंकुम सारा।
लघु सुरधनु से पंख पसारे-शीतल मलय समीर सहारे।
उड़ते खग जिस ओर मुँह किये-समझ नीड़ निज प्यारा।
बरसाती आँखों के बादल-बनते जहाँ भरे करुणा जल।
लहरें टकराती अनंत की-पाकर जहाँ किनारा।
हेम-कुंभ ले उषा सवेरे-भरती ढुलकाती सुख मेरे।
मदिर ऊँघते रहते-जब-जगकर रजनी भर तारा।

(i) **(घ)** भारत का

व्याख्या: भारत का

(ii) **(ख)** उपमा

व्याख्या: उपमा

(iii)**(घ)** करुणा का

व्याख्या: करुणा का

(iv)**(क)** छिटका जीवन हरियाली पर-मंगल कुंकुम सारा।

व्याख्या: छिटका जीवन हरियाली पर-मंगल कुंकुम सारा।

(v) **(घ)** यहाँ अपरिचित विदेशियों को भी सहारा मिलता है।

व्याख्या: यहाँ अपरिचित विदेशियों को भी सहारा मिलता है।

अथवा

अनुच्छेद को ध्यानपूर्वक पढ़कर निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिये:

सच हम नहीं सच तुम नहीं
सच है महज संघर्ष हो।
संघर्ष से हटकर जिए तो क्या जिए हम कि तुम,
जो नत हुआ वह मृत हुआ ज्यों वृक्ष से
झरकर कुसुम जो लक्ष्य भूल सका नहीं
जो हार देख झुका नहीं।

जिसने प्रणय पाथेय माना जीत उसकी रही।
सच हम नहीं सच तुम नहीं।
ऐसा करो जिससे न प्राणों में कहीं जड़ता रहे।
जो भी जहाँ चुपचाप अपने आपसे लड़ता रहे।
जो भी परिस्थितियाँ मिलें।
काँटे चुभें, कलियाँ खिलें।
हारे नहीं इंसान, है संदेश जीवन का यही।
सच हम नहीं सच तुम नहीं।

(i) **(घ)** संघर्ष
व्याख्या: कवि ने जीवन का सच संघर्ष को माना है। कवि कहता है कि भेरा तुम्हारा सच वास्तव में सच नहीं है असली सच तो निरंतर संघर्ष में है।

(ii) **(क)** समस्याओं से नहीं घबराता
व्याख्या: कवि के अनुसार जीत उसी की होती है, जो समस्याओं से नहीं घबराता है बल्कि डटकर उनका सामना करता है तथा संघर्ष करते हुए अपने लक्ष्य की ओर बढ़ता रहता है।

(iii) **(क)** गुलाब
व्याख्या: 'कुसुम' शब्द का पर्यायवाची गुलाब नहीं है, जबकि सुमनु, प्रसून तथा पुहुप, कुसुम के पर्यायवाची हैं। गुलाब एक फूल का नाम है किंतु फूल का पर्याय नहीं है।

(iv) **(क)** जो झुक गया, वह मर गया
व्याख्या: जो संघर्षों के कारण स्वयं को हारा हुआ मान लेता है अर्थात् उनके आगे झुक जाता है, वह मृत व्यंक्ति के समान होता है।

(v) **(ख)** हमें विषम परिस्थितियों में हार नहीं माननी चाहिए
व्याख्या: प्रस्तुत गद्यांश के माध्यम से कवि यह संदेश देना चाहता है कि हमें विषम परिस्थितियों में हार नहीं माननी चाहिए बल्कि उनका सामना करते हुए जीवन के मार्ग में आगे बढ़ना चाहिए।

4. **अनुच्छेद को ध्यानपूर्वक पढ़कर निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिये:**

अँधेरी रात चुपचाप आँसू बहा रही थी। निःस्तब्धता करुण सिसकियों और आहों को बलपूर्वक अपने हृदय से ही दबाने की चेष्टा कर रही थी। आकाश में तारे चमक रहे थे। पृथ्वी पर कहीं प्रकाश का नाम नहीं। आकाश से टूटकर यदि कोई भावुक तारा पृथ्वी पर जाना भी चाहता, तो उसकी ज्योति और शक्ति रास्ते में ही समाप्त हो जाती थी। अन्य तारे उसकी भावुकता अथवा असफलता पर खिलखिलाकर हँस पड़ते थे। (फणीश्वर नाथ रेणु)

(i) **(ग)** हैजे, मलेरिया रूपी महामारी का प्रकोप
व्याख्या: हैजे, मलेरिया रूपी महामारी का प्रकोप

(ii) **(क)** महामारी की विभीषिका दर्शाने के लिए
व्याख्या: महामारी की विभीषिका दर्शाने के लिए

(iii) **(ग)** अलंकारयुक्त, सशक्त खड़ी बोली
व्याख्या: अलंकारयुक्त, सशक्त खड़ी बोली

(iv) **(ग)** कथन (A) सही है लेकिन कारण (R) उसकी गलत व्याख्या करता है।
व्याख्या: कथन (A) सही है लेकिन कारण (R) उसकी गलत व्याख्या करता है।

(v) **(घ)** केवल i
व्याख्या: केवल i

5. **अनुच्छेद को ध्यानपूर्वक पढ़कर निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिये:**

मैं जग-जीवन का भार लिए फिरता हूँ,
फिर भी जीवन में प्यार लिए फिरता हूँ;
कर दिया किसी ने झंकृत जिनको छूकर
मैं साँसों के दो तार लिए फिरता हूँ।
मैं स्नेह-सुरा का पान किया करता हूँ
मैं कभी न जग का ध्यान किया करता हूँ
जग पूछ रहा उनको, जो जग की गाते,
मैं अपने मन का गान किया करता हूँ

(i) **(ग)** संसार का
व्याख्या: संसार का

(ii) **(क)** प्रेम
व्याख्या: प्रेम

(iii) **(ख)** स्नेह
व्याख्या: स्नेह

(iv) **(घ)** संसार के बंधनों की
व्याख्या: संसार के बंधनों की

(v) **(ग)** संसार का झूठा गुणगान करने वालों को
व्याख्या: संसार का झूठा गुणगान करने वालों को

6. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर देने के लिए उपयुक्त विकल्प का चयन कीजिए-

(i) **(घ)** दिल्ली
व्याख्या: दिल्ली

(ii) **(क)** वेडिंग ऐनिवर्सरी
व्याख्या: सिल्वर वेडिंग कहानी यशोधर पंत की शादी की पच्चीसवीं सालगिरह के आस-पास घूमती है। इस कहानी में पुराने और आधुनिक विचार और मान्यता के बीच एक मार्मिक द्वन्द्व है।

(iii) **(ग)** द्वारिका से लौटे सुदामा जैसी
व्याख्या: द्वारिका से लौटे सुदामा जैसी

(iv) **(क)** चड्ढा
व्याख्या: यशोधर पंत के ऑफिस में चड्ढा नया आया था, वह सीधे असिस्टेंट ग्रेड में आ गया था। उसकी हरकतें पंत जी को कहीं से भी अच्छी नहीं लगती थी।

(v) **(क)** संघर्षमयी प्रवृत्ति का
व्याख्या: संघर्षमयी प्रवृत्ति का

(vi) **(घ)** संघर्ष
व्याख्या: संघर्ष

(vii) **(ख)** गुड़
व्याख्या: कोल्हू में ईख के रस से गुड तैयार किया जाता था। फिर उस गुड़ को बाजार में बेच दिया जाता था।

(viii)**(ग)** जल निकासी

व्याख्या: पाठ के अनुसार सिंधु घाटी में जल निकासी का सबसे उन्नत प्रबंध है, जो सिंधु घाटी की एक अनूठी विशेषता है।

(ix)**(ग)** बैलगाड़ी के

व्याख्या: अतीत में दबे पाँव पाठ के आधार पर फसलों की ढुलाई बैलगाड़ी के द्वारा की जाती थी।

(x) **(घ)** अली नवाज़

व्याख्या: अजायबघर में तैनात व्यक्ति का नाम अली नवाज़ था।

खंड - ब (वर्णनात्मक प्रश्न)

7. निम्नलिखित प्रश्नों में से किन्ही दो के उत्तर दीजिये:

(i) रेडियो नाटक में ध्वनि प्रभावों और संवादों का विशेष महत्त्व है जो इस प्रकार हैं-

i. रेडियो नाटक में पात्रों से संबंधित सभी जानकारियाँ संवादों के माध्यम से मिलती हैं।
ii. पात्रों की चारित्रिक विशेषताएँ संवादों के द्वारा ही उजागर होती हैं।
iii. नाटक का पूरा कथानक संवादों पर ही आधारित होता है।
iv. इसमें ध्वनि प्रभावों और संवादों के माध्यम से ही कथा को श्रोताओं तक पहुँचाया जाता है।
v. संवादों के माध्यम से ही रेडियो नाटक का उद्देश्य स्पष्ट होता है।
vi. संवादों के द्वारा ही श्रोताओं को संदेश दिया जाता है।

(ii) संचार की प्रक्रिया में कई चरण या तत्त्व सम्मिलित होते हैं। वे निम्नांकित हैं-

i. स्रोत या संचारक - संचार प्रक्रिया को प्रारम्भ करनेवाला/बात कहनेवाला।
ii. कूटीकरण/एनकोडिंग- भावों को भाषा में/शब्दों में बदलने की प्रक्रिया।
iii. संदेश - कथ्य।
iv. माध्यम (चैनल) - मौखिक शब्द, टेलीफोन, समाचार पत्र, रेडियो, टेलीविजन, इन्टरनेट व फ़िल्म आदि।
v. प्राप्तकर्त्ता (रिसीवर) - संदेश प्राप्तकर्त्ता, जो कूट भाषा की डी-कोडिंग करता है अर्थात् कथ्य को समझने का प्रयास करता है।
vi. फीडबैक - संदेश प्राप्तकर्त्ता की अच्छी/बुरी प्रतिक्रिया।

(iii)विशेष लेखन को सभी पाठक नहीं पढ़ते, प्रत्येक विषय का पाठक वर्ग अलग होता है जैसे समाचार पत्र में कारोबार औए व्यापार का पन्ना कम पाठक पढ़ते हैं लेकिन जो पाठक पढ़ते है उनकी संख्या सामान्य पाठकों से ज्यादा होती है और उनकी उम्मीद होती है कि उनको उनके विषय की ज्यादा से ज्यादा जानकारी मौजूदा समय के हिसाब से मिले।

8. निम्नलिखित में से किसी एक विषय पर लेख लिखिये:

(i) **परहित सरिस धर्म नहिं भाई**

परोपकार से बड़ा इस संसार में कुछ नहीं होता है। इस विषय में गोस्वामी तुलसीदास ने कहा है कि-

"परहित सरिस धर्म नहिं भाई।
परपीड़ा सम नहिं अधमाई।।"

अर्थात् परहित (परोपकार) के समान दूसरा कोई धर्म नहीं है और दूसरों को पीड़ा (कष्ट) देने के समान कोई अन्य नीचता या नीच कर्म नहीं है। पुराणों में भी कहा गया है, 'परोपकारः पुण्याय पापाय परपीड़नम्' अर्थात् दूसरों का उपकार करना सबसे बड़ा पुण्य तथा दूसरों को

कष्ट पहुँचाना सबसे बड़ा पाप हैं।

परोपकार की भावना से शून्य मनुष्य पशु तुल्य होता है, जो केवल अपने स्वार्थों की पूर्ति तक ही स्वयं को सीमित रखता है। मनुष्य जीवन बेहतर है क्योंकि मनुष्य के पास विवेक है। उसमें दूसरों की भावनाओं एवं आवश्यकताओं को समझने तथा उसकी पूर्ति करने की समझ है और इस पर भी अगर कोई केवल अपने स्वार्थ को ही देखता हो, तो वाकई वो मनुष्य कहलाने योग्य नहीं है।

इसी कारण मनुष्य सर्वश्रेष्ठ प्राणी है। इस दुनिया में महात्मा बुद्ध, ईसा मसीह, दधीचि ऋषि, अब्राहम लिंकन, मदर टेरेसा, बाबा आम्टे जैसे अनगिनत महापुरुषों के जीवन का उद्देश्य परोपकार ही था। भारतीय संस्कृति में भी इस तथ्य को रेखांकित किया गया है कि मनुष्य को उस प्रकृति से प्रेरणा लेनी चाहिए, जिसके कण-कण में परोपकार की भावना व्याप्त है। भारतीय संस्कृति में इसी भावना के कारण पूरी पृथ्वी को एक कुटुंब माना गया है तथा विश्व को परोपकार संबंधी संदेश दिया गया है। इसमें सभी जीवों के सुख की कामना की गई है।

(ii) **प्राकृतिक आपदाएँ**

प्राकृतिक आपदा को परिभाषित करते हुए कहा जा सकता है कि यह एक ऐसी प्राकृतिक घटना है जिससे अनेक लोग प्रभावित हों और उनका जीवन खतरे में हो। प्राकृतिक आपदा एक असामान्य प्राकृतिक घटना है, जो कुछ समय के लिए ही आती है, परंतु अपने विनाश के चिह्न लंबे समय के लिए छोड़ जाती है।

प्राकृतिक आपदाएँ अनेक तरह की होती हैं, जैसे-हरिकेन, सुनामी, सूखा, बाढ़, टायफून, बवंडर, चक्रवात आदि, मौसम से संबंधित प्राकृतिक आपदाएँ है। दूसरी ओर भूस्खलन एवं बर्फ की सरकती चट्टानें ऐसी प्राकृतिक आपदाएँ हैं, जिसमें स्थलाकृति परिवर्तित हो जाती है। भूकंप एवं ज्वालामुखी प्लेट विवर्तनिकी के कारण आने वाली प्राकृतिक आपदाएँ हैं। इन प्राकृतिक आपदाओं के पीछे उल्लेखनीय योगदान मानवीय गतिविधियों का भी होता है। मानव अपने विकास कार्यो के लिए प्राकृतिक संसाधनों का अंधाधुंध दोहन करता है। वैश्विक तापीकरण भी प्राकृतिक आपदा का ही एक रूप है। वस्तुतः जनसंख्या वृद्धि, औद्योगिक क्रियाकलाप तथा प्रकृति के साथ खिलवाड़ ऐसे मुख्य कारण हैं, जिनके कारण मानव समाज को प्राकृतिक आपदाओं का सामना करना पड़ता है।

प्राकृतिक आपदाओं से बचने के लिए सबसे महत्त्वपूर्ण उपाय यह है कि ऐसी तकनीकों को विकसित किया जाए, जिससे प्राकृतिक आपदाओं की सटीक भविष्यवाणी की जा सके, ताकि समय रहते जान-माल की सुरक्षा संभव हो सके। इसी उद्देश्य के तहत अंतरिक्ष विज्ञान से इस क्षेत्र में उल्लेखनीय सफलता मिली है। इसके अतिरिक्त प्राकृतिक आपदा की स्थिति उपस्थित होने पर किस तरह उससे निपटना चाहिए, इसके लिए आपदा प्रबन्धन सीखना अति आवश्यक है। इस उद्देश्य हेतु एक व्यवस्थित पाठ्यक्रम होना चाहिए तथा प्रत्येक नागरिक के लिए इसका प्रशिक्षण अनिवार्य होना चाहिए।

(iii) **नक्सलवाद की समस्या**

बढ़ते दौर के साथ नक्सलवाद की घटनाओं में वृद्धि होती रही है।हाल ही में नक्सलवाद की घटनाएँ बढ़ी हैं। प० बंगाल में राजधानी एक्सप्रेस को घंटों रोका जाता है तो कहीं थाने, रेलवे स्टेशन आदि को बम से उड़ा दिया जाता है। इन सब घटनाओं से सारा देश उद्वेलित हो उठा है। वस्तुत: नक्सलवाद मार्क्सवाद के वर्ग संघर्ष सिद्धांत पर आधारित है। इसके अंतर्गत दलित व शोषित वर्ग का प्रथम शत्रु जमींदार, ठेकेदार, साहूकार आदि हैं। नक्सलवादी मानता है कि ये छोटे पूँजीपति ही पूँजीवाद के स्तंभ अधिकारियों, बड़े पूँजीपतियों तथा शासक वर्ग को आधार प्रदान करते हैं।

नक्सलवादियों का प्रमुख उद्देश्य सत्ता केंद्रों पर हमला करना होता है।वास्तव में ये लोग सत्ता के विरुद्ध संघर्ष करते हैं। ये लोग विभिन्न तरीकों से धन वसूलते हैं। ये वन-रक्षकों से वसूली, सरकारी या पूँजीपतियों से धन छीनना, फिरौती, विदेशों से धन, हथियार आदि प्राप्त करते हैं। इनका लक्ष्य नक्सल राज्य की स्थापना करना है। ये 'दंडकारण्य' की माँग कर रहे हैं। सरकार द्वारा नक्सलवादी आंदोलन को दबाने के प्रयास भी किए गए हैं। कई बार सुरक्षा-बलों ने अभियान चलाए, परंतु राजनीतिक अदूरदर्शिता के कारण ये अभियान असफल हो गए हैं। आज इनकी शक्ति इतनी बढ़ गई है कि ये भारत की संप्रभुता को चुनौती देने लगे हैं। इस समस्या के समाधान के लिए केंद्र व राज्य सरकारों को गंभीर प्रयास करने होंगे। सरकार को चाहिए कि वह नक्सली नेताओं से बातचीत करके उनकी समस्याएँ जाने तथा नक्सल-प्रभावित क्षेत्रों का पिछड़ापन दूर करने का प्रयास करें। साथ-साथ भूमि-सुधार कानून में संशोधन भी जरूरत है। यदि ये प्रयास तत्काल नहीं किए गए तो देश की एकता खतरे में पड़ जाएगी।बिना उनकी समस्याओं को सुने और समझे ,इस नक्सलवाद को नहीं रोका जा सकता है।

(iv) **तनाव : आधुनिक जीवन-शैली की देन**

आज मनुष्य विकास के उच्चतम स्तर पर पहुँच चुका है, परंतु वह और अधिक की लालसा कर रहा है। इसकी वजह से वह एक नई बीमारी की गिरफ्त में आ रहा है। वह है- तनाव। तनाव एक मानसिक प्रक्रिया है। यह हमारे दिमाग में हमेशा रहता है। घटनाएँ तनाव का कारण नहीं हैं, बल्कि मनुष्य इसे कैसे समझता या प्रभावित होता है, यह तनाव का कारण है। तनाव शक्तिशाली चीज है। यह या तो बहुत अच्छा हो सकता है, या नुकसान का कारण हो सकता है। यह बहती नदी के समान है। जब मनुष्य इस पर बाँध बनाता है। तो वह पानी की दिशा को अन्य स्थान की ओर अपनी इच्छा से बदल सकता है, परंतु जब नदी पर बाँध नहीं होता तो वह बहुत विनाश करती है। तनाव भी ऐसा ही है। आज समाज में तनाव से एक बहुत बड़ा तबका ग्रस्त है।

मनुष्य हमेशा किसी-न- किसी उधेड़बुन में रहता है। ऐसा नहीं है कि तनाव पुराने युग में नहीं होता था। तब भी तनाव होता था परंतु बहुत कम होता था। आधुनिक जीवन-शैली से निरर्थक तनाव उत्पन्न हो रहा है, जैसे-बिजली का चला जाना, बच्चे का सही ढंग से होमवर्क न करना, भीड़ के कारण हर समय ट्रेन या बस छूटने का भय, दफ़्तर, स्कूल आदि गंतव्य पर सही समय पर न पहुँचने का भय, मीडिया द्वारा प्रचारित भय। हमारे जीवन जैसे-जैसे संसाधन बढ़ रहे हैं या जिस प्रकार से हमारी जीवन-शैली बदल रही है, वैसे-वैसे हम और अधिक तनाव के चंगुल में फँसते जा रहे हैं।

मनुष्य स्वयं को अमर या सर्वाधिक सुखी करना चाहता है, परंतु वह अपनी क्षमता व साधनों का ध्यान नहीं रखता। मनुष्य थोड़े समय में अधिक काम करना चाहता है। वह हमेशा जीतना चाहता है। अतः आज मानव नकारात्मक प्रवृत्ति से ग्रस्त है। उसे हर कार्य में नुकसान होने का भय रहता है। तनाव रहने से मनुष्य विभिन्न व्याधियों से ग्रस्त हो जाता है। मनुष्य निराशाजनक जीवन जीने लगता है। वह चिड़चिड़ा, गुस्सैल प्रवृत्ति का हो जाता है। हमारे जीवन में तनाव होने की अधिकांश वजह हमारी नकरात्मकता है।

वस्तुत: तनाव हमारे जीवन के लाभ-हानि खाते में उधार की प्रविष्टि है। जब मनुष्य अपनी मुश्किलों को हल नहीं कर पाता तो वह तनावग्रस्त हो जाता है। ये मुश्किलें वास्तविक विचार के न होने के कारण हैं इसलिए मनुष्य को अधिक-से-अधिक अच्छे विचार सोचने चाहिए। मनुष्य को रचनात्मक ढंग से नए तरीके से व धैर्य से खुशी को ढूँढ़ना चाहिए। थोड़े समय में अधिक पाने की इच्छा त्याग देनी चाहिए।

मनुष्य को व्यापार के इस सिद्धांत का पालन करना चाहिए-अच्छे को बेहतर का दुश्मन न बनाइए। मनुष्य को अपनी मनोवृत्ति सकारात्मक बनानी चाहिए। मनुष्य का मस्तिष्क बहुत बड़ी भूमि के समान है यहाँ वह खुशी या तनाव उगा सकता है। दुर्भाग्य से यह मनुष्य का स्वभाव है कि अगर वह खुशी के बीज बोने की कोशिश न करे तो तनाव पैदा होता है। खुशी फसल है और तनाव घासफूस है।

9. निम्नलिखित प्रश्नों में से किन्ही दो के उत्तर दीजिये:

(i) **जन-धन योजना**

जन-धन योजना का आशय है कि भारत के सभी नागरिकों के पास अपना बैंक खाता हो, जो खास कर गरीबों के लिए आवश्यक है। 15 अगस्त, 2014 को प्रधानमंत्री नरेद्र मोदी ने जन-धन योजना की घोषणा की, जिसके अंतर्गत प्रत्येक परिवार को अपना एक बैंक अकाउंट बनाना होगा, जिसमें उन्हें 1 लाख रूपये की बीमा राशि एवं एक डेबिट कार्ड की सुविधा प्राप्त होगी।

प्रधानमंत्री जन-धन योजना गरीबों को ध्यान में रखकर बनाई गई है, जिससे उनमे बचत की भावना का विकास हो, साथ ही उनमें भविष्य की सुरक्षा का अहम भाव जागे। इसके अतिरिक्त इस कदम से देश का पैसा भी सुरक्षित होगा और जनहित के कार्यों को बढ़ावा भी मिलेगा। यह योजना केद्र सरकार का बड़ा और अहम फैसला है, जोकि देश की नींव को मजबूत बनाएगा।

प्रधानमंत्री जन-धन योजना का नारा है 'सबका साथ सबका विकास' अर्थात् देश के विकास में ग्रामीण लोगों का योगदान अहम है, जिसे भूला नहीं जा सकता। अब तक जितनी भी योजनाओं को सुना जाता था वह केवल शहरों तक ही सीमित होती थीं, लेकिन देश का बड़ा भाग ग्रामीण तथा किसान परिवार हैं, जिन्हें जागरूक तथा सुरक्षित करना ही इस योजना का अहम उद्देश्य है।

इस योजना के अंतर्गत कई मूलभूत सुविधाएँ भी प्रदान की गई हैं। खाता धारकों को 30,000 रूपये का बीमा कवरेज दिया जाएगा। साथ ही किसी आपत्ति की स्थिति में बीमा राशि 1 लाख रूपये तक का कवरेज दिया जाएगा।

इस योजना में शून्य स्तर पर भी खाते खोले जा रहे हैं, जिन्हें जीरो बैलेंस की सुविधा कहा जाता है। जन-धन योजना वर्तमान सरकार द्वारा लिया गया अहम निर्णय है, जिसके तहत गरीबों को आर्थिक रूप से थोड़ा सशक्त बनाने की कोशिश की गई है, साथ ही बैंकिंग सिस्टम को देश के हर व्यक्ति तक पहुँचाने की कोशिश की गई है। इस योजना से गरीबों और मजदूरों को लाभ मिल रहा है।

(ii) **प्रदूषित यमुना**

वर्तमान विज्ञान-युग में मानव को जहाँ असंख्य वरदान मिले हैं, वहाँ कुछ अभिशाप भी मिले हैं या यूँ कहा जाए कि प्रगति की होड़ में मानव ने वरदानों का दुरुपयोग किया है। इसका जीता जागता उदाहरण है-जल-प्रदूषण। आज के दौर में जल प्रदूषण एक आम बात हो चुका है।

जिस पतित पावनी यमुना में स्नान कर निर्मल होते थे, आज वह स्नान के योग्य नही रह गई है। धार्मिक आस्था के चलते यदि नहा भी लिया जाए, तो विभिन्न प्रकार के त्वचा रोग होने की आशंका बनी रहती है। इसका कारण है कल-कारखानों से निकले अवशिष्ट पदार्थ, हानिकारक रसायन, दूषित जल आदि,सब यमुना में ही जाते हैं। यह एक ऐसी विकराल समस्या बन गई है, जिसका कोई समाधान नही दिखाई देता। शहर भर का टनों कचरा,

दूषित पदार्थ, पशुओं की हड्डियाँ, राख, मिट्टी आदि अनेक वस्तुएँ यमुना में प्रवाहित कर दी जाती हैं। परिणामतः यमुना का आकार और स्वच्छता दिनो-दिन घटती जा रही है।
प्रत्येक वर्ष सरकारी योजनाओं के तहत गंगा-यमुना स्वच्छीकरण अभियान के नाम पर लाखों-करोड़ों रुपया बाँटा जाता है। संबंधित विभाग उसका ब्यौरा भी पेश करते है, परंतु यमुना की हालत जस-की-तस बनी हुई है। यदि हम सही समय पर सचेत नहीं हुए, तो इसके परिणाम भयंकर रूप से सामने आएँगे। हम सबको जागरूक होकर यमुना को मैली होने से बचाने के लिए कृत-संकल्प होना होगा।
वास्तव में, यमुना को प्रदूषण से बचाना है, तो यमुना में पड़ने वाले नालों को रोकने के लिए यमुना के सहारे नए नाले खोदे जाएँ तथा इस गंदे पानी को ट्रीटमेंट प्लांट के सहारे साफ कर खेती के काम में लाया जाए। इस प्रकार की योजना तैयार होने से यमुना का जल स्वच्छ रह सकता है।

(iii) **क्रिकेट का बादशाह : सचिन**

खेलों की दुनिया में कुछ ऐसी उपलब्धियाँ होती है, जिन तक पहुँचना आसान नहीं होता। अंतर्राष्ट्रीय एकदिवसीय क्रिकेट में कोई बल्लेबाज अब तक 200 रन नहीं बना पाया था, लेकिन भारत के सचिन तेंदुलकर ने दक्षिण अफ्रीका की मज़बूत टीम के खिलाफ यह कारनामा कर दिखाया।
इन्हीं पंक्तियों के साथ अमेरिका की प्रतिष्ठित पत्रिका 'टाइम' ने मास्टर ब्लास्टर सचिन की वर्ष 2010 में 24 फरवरी को दक्षिण अफ्रीका के खिलाफ ग्वालियर वनडे में खेली गई नाबाद 200 रनों की विश्व रिकॉर्ड पारी को वर्ष 2010 के, दस सबसे यादगार क्षणों में शामिल किया था।
'टाइम' द्वारा कही गई बात बिलकुल सच है। सचिन क्रिकेट जगत में एक ऐसी जीती जागती मिसाल बन चुके हैं, जिसका कोई मुकाबला नहीं।यहीं कारण है ,कि उन्हें 'क्रिकेट का भगवान' कहा जाता है।
दाएँ हाथ के बल्लेबाज सचिन ने अपने अंतर्राष्ट्रीय करियर की शुरुआत 15 नवंबर, 1989 को की थी, जबकि एक दिवसीय क्रिकेट करियर की शुरुआत 18 दिसंबर, 1989 को पाकिस्तान के विरुद्ध। उसके बाद इस महान खिलाड़ी ने कभी पीछे मुड़कर नहीं देखा और रिकॉर्ड पर रिकॉर्ड बनाता चला गया।
टेस्ट क्रिकेट में 51 शतक एवं 68 अर्द्ध-शतकों के साथ 15,921 रन बनाने वाले वे दुनिया के प्रथम बल्लेबाज हैं। अंतर्राष्ट्रीय एक दिवसीय मैचों में उन्होंने 49 शतकों एवं 95 अर्द्ध-शतकों के साथ 18,000 से अधिक रन बनाए हैं और ऐसा करने वाले वे दुनिया के पहले एवं एकमात्र बल्लेबाज हैं। वास्तव में, रिकॉर्ड एवं सचिन एक-दूसरे के पर्याय बन गए हैं। 'रन मशीन' 'लिटिल मास्टर', 'मास्टर ब्लास्टर' आदि जैसे उपनाम सचिन के कद के आगे बौने नज़र आते हैं। इतना ही नहीं, खेल के क्षेत्र में भारत रत्न का सम्मान पाने वाले वे पहले खिलाड़ी हैं। 'भारत रत्न' से सम्मानित सचिन आने वाली पीढ़ियों के लिए प्रेरणा स्रोत हैं। 'क्रिकेट के बादशाह' सचिन निश्चय ही भारत के गौरव हैं।

10. निम्नलिखित प्रश्नों में से किन्ही दो के उत्तर दीजिये:

(i) **साक्षात्कार**

गिरीश (प्रश्नकर्ता)-सर्वप्रथम आपको बधाई, अपनी कमजोरी को अपनी ताकत बनाने और इतना अद्‌भुत कारनामा करने के लिए! आपकी उम्र क्या है?
बुधिया- पाँच साल।

गिरीश- आपकी यह विकलांगता कब से है?
बुधिया- जन्म से।
गिरीश- इस समय आप कहाँ पढ़ रहे हैं?
बुधिया- नवरसना एकेडमी, बेउर में।
गिरीश- विकलांग होने से आपको चलने में परेशानी होती है?
बुधिया- होती थी, परंतु अब आदत हो गई है।
गिरीश- आपको यह कारनामा करने की प्रेरणा किससे मिली ?
बुधिया- जी, उड़ीसा के बुधिया जी से जो 65 किलोमीटर दौड़ चुके हैं।
गिरीश- आपका सपना क्या है?
बुधिया- मैं कश्मीर से कन्याकुमारी तक की दूरी पैदल तय करना चाहता हूँ।
गिरीश- हमारी शुभकामनाएँ तुम्हारे साथ हैं।
बुधिया- बहुत-बहुत धन्यवाद! .

(ii) कविता को फूल के बहाने से खिलने की प्रक्रिया से जोड़ा गया है। कविता के माध्यम से हमारी भावनाएँ, हमारे विचार, हमारी कल्पनाएँ विकसित होती हैं। कविता ने फूल से ही खिलना सीखा है। कविता का जो विकास-क्रम है, उसे फूल नहीं जानता। एक निश्चित समय तक महकने के बाद फूल तो अपनी विकसित जीवन-लीला समाप्त नष्ट हो जाते हैं, लेकिन कविता का स्वरूप अनंत काल तक बना रहता है। सभी अपने अर्थ के अनुसार कविता पढ़ते, समझते और अपनी चेतना का आधार बनाते हैं। कविता वस्तुतः निरंतर युगों-युगों तक विकास पाती रहती है।

(iii) तुलसीदास के युग में जनसामान्य के पास आजीविका के साधन नहीं थे। किसान की खेती चौपट रहती थी। भिखारी को भीख तक नहीं मिलती थी। दान-कार्य भी बंद ही था। व्यापारी का व्यापार ठप्प था। लोगों को नौकरी भी नहीं मिलती थी। चारों तरफ बेरोजगारी थी। लोगों की समझ में नहीं आता था कि वे कहाँ जाएँ, क्या करें? इससे पता चलता है कि बेकारी की समस्या तुलसी के जमाने में भी थी I

11. निम्नलिखित प्रश्नों में से किन्ही दो के उत्तर दीजिये:

(i) गोदी का चाँद अर्थात् बच्चा माँ को हर्षित करता है और गगन का चाँद बच्चे को यानी गोदी के चाँद को हर्षित करता है। प्रत्येक माँ के लिए उसका बच्चा चाँद के समान सुन्दर और प्रिय होता है और बच्चे को चन्द्रमा आकर्षित करता है,वह उसे अपने हाथों में लेना चाहता है। इस प्रकार माँ के लिए उसका बच्चा चाँद है अर्थात् प्यारा है और बच्चे के लिए गगन का चाँद प्यारा है।

(ii) बच्चों के पैर कपास की तरह नरम, मुलायम, हलके फुलके और चोट खाने में समर्थ होते हैं। इसीलिए कवि ने बच्चों के तलवों की तुलना कपास से की है क्योंकि पतंग को ऊँचाई तक पहुँचाने की धुन में वे इतने मगन हो जाते हैं कि कपास जैसे मुलायम तलवे छत की कठोरता का अनुभव नहीं कर पाते और कूदते -फाँदते हुये लगी चोट को आसानी से सह लेते हैं।

(iii) कवि ने गाँव की सुबह का सुंदर चित्रण करने के लिए गतिशील बिंब-योजना की है। भोर के समय आकाश नीले शंख की तरह पवित्र लगता है। उसे राख से लिपे चौके के समान बताया गया है जो सुबह की नमी के कारण गीला लगता है। फिर वह लाल केसर से धोए हुए सिल-सा लगता है। कवि दूसरी उपमा स्लेट पर लाल खड़िया मलने से देता है। ये सारे उपमान ग्रामीण परिवेश से संबंधित हैं। आकाश के नीलेपन में जब सूर्य प्रकट होता है तो ऐसा लगता है जैसे नीले जल में किसी युवती का गोरा शरीर झिलमिला रहा है। सूर्य के उदय होते ही

उषा का जादू समाप्त हो जाता है। ये सभी दृश्य एक-दूसरे से जुड़े हुए हैं। इनमें गतिशीलता है।

12. निम्नलिखित प्रश्नों में से किन्ही दो के उत्तर दीजिये:

(i) कारागार से भक्तिन को यमलोक की भाँति डर लगता था। जब उसे यह कहा जाता है कि उसकी मालकिन को जेल में डाल दिया जाएगा और मुक्त छोड़ दिया जाएगा, तो इस बात को अन्यायपूर्ण मानकर वह लाट साहब से लड़ने के लिए तत्पर रहती।
भक्तिन के रूप में लेखिका ने एक भारतीय नारी का दिलचस्प और संवेदनशील चित्रण करने का प्रयत्न किया है। भक्तिन एक संघर्षशील तथा स्वाभिमानी स्त्री है। वह परिस्थितियों से डरती नहीं, बल्कि उनका मुकाबला करती है। पति की मृत्यु के बाद वह लाचार न रहकर खेत में कड़ा परिश्रम करके अपनी बेटियों का पालन-पोषण करती है। वह शास्त्रों के तर्कों द्वारा दूसरों को अपने मन के अनुकूल बना लेने में भी निपुण थी। इस प्रकार कहा जा सकता है कि भक्तिन कर्तव्य-परायण, संघर्षशील, स्वाभिमान आदि गुणों से युक्त थी।

(ii) **काले मेघा पानी दे** संस्मरण में वर्षा न होना, सूखा पड़ना आदि के विषय में विज्ञान अपना तर्क देता है और वर्षा न होने जैसी समस्या के सही कारणों का ज्ञान कराते हुए हमें वास्तविक सत्य से परिचित कराता है। इस सत्य पर लोक प्रचलित विश्वास और सहज प्रेम की जीत हुई है क्योंकि लोग इस समस्या का हल अपने-अपने ढंग से ढूँढ़ने में जुट जाते हैं, जिनका कोई वैज्ञानिक आधार नहीं है। लोगों में प्रचलित विश्वास उनके अनुभवों के आधार पर इतना पुष्ट है कि वे विज्ञान की बात मानने को तैयार नहीं होते हैं।

(iii) रचना के संदर्भ में अँधड़ का आशय भावनात्मक आँधी से है जो किसी के मन में अचानक किसी वस्तु, व्यक्ति, भाव या स्थिति को देखकर उत्पन्न होती है जैसे क्रौंच पक्षी के करुण विलाप को सुनकर बाल्मीकि के मन में कविता उत्पन्न हुई। बीज का आशय उस विचार और अभिव्यक्ति से है, जब कोई विषय कवि के मन को कुरेदता है और वह अभिव्यक्ति के लिए व्याकुल हो उठता है।

13. निम्नलिखित प्रश्नों में से किन्ही दो के उत्तर दीजिये:

(i) बाज़ार दर्शन से आशय है-बाजार के बारे में विवरण; जैसे-बाजार में क्या-क्या मिलता है? बाजार से लोग क्यों आकर्षित होते हैं? बाज़ार के आकर्षण से बचने के क्या-क्या उपाय हैं? बाज़ार के गुण-दोषों का वर्णन, बाज़ार की सार्थकता इत्यादि के बारे में विस्तृत जानकारी देना, बाजार के लाभ व हानि के बारे में रोचक ढंग से बताना आदि इसमें शामिल हैं।

(ii) लेखक का मानना है कि कवि को सांसारिक विषय-वासनाओं में न पड़कर स्वतंत्र व फक्कड़ जीवन व्यतीत करना चाहिए। उसके द्वारा स्वतंत्र विचारों की अभिव्यक्ति होनी चाहिए, जो संसार के चक्रव्यूह में पड़कर नहीं की जा सकती। कवि को शिरीष के फूल की तरह मस्त, चिंतारहित और मोह-माया से दूर ही रहना चाहिए क्योंकि लेखक के अनुसार, सांसारिक विषय-वासनाओं और मोह-माया में पड़ने वाला व्यक्ति कभी कवि नहीं बन सकता है।

(iii) लेखक **बाबा साहेब भीमराव आंबेडकर** के आधार पर मनुष्य की क्षमता को निम्नलिखित बातें प्रभावित करती हैं -

i. शारीरिक वंश-परंपरा (रंग, रूप, आकृति)।

ii. सामाजिक उत्तराधिकार एवं मनुष्य के अपने प्रयत्न।